© 2018 IJSRST | Volume 4 | Issue 2 | Print ISSN: 2395-6011 | Online ISSN: 2395-602X

प्राथमिक विद्यालय में छात्रो की पाठ्य सहगामी क्रियाओं का अध्ययन

Rajeev Kumar
M.A (Education) NET

सारांश

शिक्षा एक जीवन्त पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है जो बालक के जन्म से प्रारम्भ होकर जीवन भर चलती है। शिक्षा का मूलभूत उद्देश्य बालक का सर्वांगीण विकास करना, बालक को समाज का सभ्य एवं समायोजित नागरिक बनाना होता है। बालक के सर्वांगीण विकास के उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए शारीरिक, मानसिक, सामाजिक विकास पर बल दिया जाना चाहिए। प्राथमिक शिक्षा जो बालक के जीवन भर की शिक्षा का आधार होता है। इस अवस्था में बालक का शारीरिक और मानसिक विकास भी होता रहता है। विद्यालय में ज्ञान वर्धन के साथ–साथ अन्य क्रिया–कलाप भी होते हैं। बालक को पाठ्यक्रम से सम्बन्धित ज्ञान के अतिरिक्त विद्यालय में जो क्रियायें करायी जाती है वह पाठ्य सहगामी क्रियायें कहलाती हैं। जैसे खेल–कूद, शैक्षिक भ्रमण, वाद–विवाद, भाषा आदि जिससे बालकों में स्वतंत्र चिन्तर की शक्ति विकसित होती है और उनका सन्तुलित विकास होता है। पहले पाठ्य सहगामी क्रियाओं को विशेष महत्व नही दिया गया था, इसे विद्यालय के समय समाप्ति के बाद अतिरिक्त कार्य के रूप में जाना जाता था। परन्तु वर्तमान समय में इसके महत्व को देखते हुए पाठ्य सहगामी क्रियायें विद्यालय पाठ्यक्रम का आवश्यक अंग माना जाने लगा है। इससे छात्रों के ज्ञान को व्यवहारिक बनाया जा सकता है तथा बालकों के रूचि के अनुसार आगे बढ़ने के लिए सही दिशा प्रदान की जा सकती है। पाठ्य सहगामी क्रियाओं से बालकों में नागरिकता के गुणों, सामाजिकता का विकास, अवकाश का सदुपयोग, ज्ञान का व्यवहार में उपयोग, स्वानुशासन की भावना, मानसिक विकास, शारीरिक विकास, मनोरंजन नैतिकता एवं मूल्यों का विकास संभव होता है, जो बालक के सर्वांगीण विकास के आवश्यक तत्व हैं। अतः विद्यालय में पाठ्य सहगामी क्रियाओं के महत्व को स्वीकार किया जाना चाहिए और समय तालिका में स्थान देते हुए प्रभावी तरीके से पाठ्य सहगामी क्रियायें करानी चाहिए।

प्रस्तावना –

शिक्षा एक जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है जो व्यक्ति को परिवार, समाज विद्यालय एवं अनुभव से प्राप्त होती है। विद्यालयों को शिक्षा का प्रमुख केन्द्र माना जाता है। जहाँ पर बालक को सुनियोजित ढंग से पाठ्यक्रम के अनुसार शिक्षा प्रदान की जाती है। शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य बालक का सर्वांगीण विकास करना होता है। जिससे बालक शरीरिक और मानसिक रूप से स्वस्थ होकर समाज का सभ्य नागरिक बन सके। पहले विद्यालय के कार्यों में केवल पढ़ना, लिखना सिखाया जाना ही था, लेकिन वर्तमान समय शिक्षा व्यवस्था एवं आवश्यकता में परिवर्तन के कारण विद्यालयों में अन्य क्रिया

कलापों पर भी बल दिया जाने लगा है। विद्यालय का प्रमुख कार्य बालक का सर्वांगीण विकास करना है। जिसके लिए विद्यालयों में पाठ्य सहगामी क्रियायें भी आयोजित होने लगी हैं। जिसके द्वारा बालकों का शरीरिक, मानसिक, सामाजिक विकास सम्भव हो सका है। पहले पाठ्य सहगामी क्रियाओं को विद्यालय में स्थान प्राप्त नही था लेकिन वर्तमान समय में इसका महत्व काफी बढ़ गया है।

प्राचीन अवधारणाओं में पाठ्यक्रम सम्बन्धी क्रियाओं के अलावा विद्यालय में जो क्रियायें की जाती थी उन्हें अतिरिक्त पाठ्यक्रम क्रियाओं की संज्ञा दी गयी थी। यह क्रियायें विद्यालय के सुविधाओं और बालक की इच्छा पर निर्भर थी। इनकी सफलता और असफलता पर विशेष ध्यान नही दिया जाता था और न ही समय तालिका में उनके लिए कोई विशेष स्थान था। यह सब क्रियायें विद्यालय के समय के बाद आयोजित की जाती थी परन्तु वर्तमान समय में पाठ्य सहगामी क्रियायें विद्यालय के पाठ्यक्रम का एक अभिन्न अंग बनती जा रही हैं और विद्यालय की समय तालिका में इनका उचित स्थान भी प्राप्त होने लगा है। यह विद्यालय के अतिरिक्त समय की क्रियायें न होकर विद्यालय पाठ्यक्रम एवं समय तालिका का एक आवश्यक भाग हो गया है।

माध्यमिक शिक्षा आयोग के अनुसार, ''स्वच्छ आनंदप्रद तथा सुव्यवस्थित स्कूल भवन मिल जाने के पश्चात हम चाहेंगे कि स्कूल में विविध प्रकार की संवृद्धि क्रियाओं का आयोजन हो जो विद्यार्थियों के विकास सम्बन्धित आवश्यकताओं को पूरा कर सके उसमें मनोरंजक कार्यों, क्रियाओं तथा योजनाओं की व्यवस्था करनी होगी जो बच्चों को प्रभावित करे और उनकी विभिन्न रूचियों को विकसित करें।''

पाठ्य सहगामी क्रियायें –

विद्यालयों में आयोजित होने वाली पाठ्य सहगामी क्रियायें निम्नलिखित हैं–

1. **दैनिक सामूहिक सभा –**
   विद्यालय में सर्वप्रथम प्रार्थना सभा का आयोजन होता है जो छात्र एवं अध्यापक दोनों के लिए बहुत महत्वपूर्ण होता है और प्रार्थना सभा के बाद दैनिक एक सभा का आयोजन होना चाहिए जिसमें नियमितता, अनुशासन और नैतिकता आदि से सम्बन्धित बातें भी बतायी जानी चाहिए जिससे बालकों में नैतिक मूल्यों का विकास होता है।
2. **विषय सम्बन्धी समिति–**
   विद्यालय में पाठ्य सहगामी क्रियायें के अन्तर्गत कुछ ऐसे विषय हैं जिस पर विशेष समिति का गठन किया जाता है। जैसे– विज्ञान कल्ब, कृषि समुदाय, भाषा समिति आदि। इससे छात्रों में स्वतंत्र चिन्तन एवं रूचि का विकास होता है।
3. **खेल–कूद–**
   बालकों की खेल–कूद के प्रति रूचि ज्यादा होती है। विद्यालयों में खेल–कूद का विशेष महत्व रहा है। खेल से बच्चों का मनोरंजन प्राप्त होता है तथा बालकों के शरीरिक, मानसिक एवं सामाजिक गुणों का विकास होता है।

4. **विद्यालय पत्रिका प्रकाशन–**
विद्यालय में समय–समय पर मासिक, त्रिमासिक, वार्षिक आदि पत्रिकाओं का प्रकाशन होता रहता है जिसमें बच्चों के उत्कृष्ठ लेखों का प्रकाशन होता है, इससे छात्रों में मौलिक लेखन शैली का विकास होता है।
5. **शैक्षिक भ्रमण–**
विद्यालयों द्वारा समय–समय पर बालकों को शैक्षिक भ्रमण कराया जाता है जो बालक के ज्ञान को प्रत्यक्ष एवं व्यावहारिक बनाते हैं। यह बालकों को किसी विषय वस्तु का प्रत्यक्ष ज्ञान प्रदान करने का एक माध्यम है।
6. **प्रदर्शन–**
विद्यालयों में विभिन्न प्रकार के कार्य कराये जाते है। नाटक, चित्रकला, संगीतकला, फोटोग्राफी आदि कुछ ऐसे कार्य है जो अभिरूचि प्रदर्शन के अन्तर्गत आते है। विद्यालयों में ऐसे अवसर प्राप्त होने चाहिए जिससे बालक अपने अभिरूचियों का प्रदर्शन कर सके जिससे बालक को सही दिशा देने में सहायता दी जा सके।
7. **वाद–विवाद–**
वाद–विवाद और भाषण प्रतियोगिता छात्रों के अभिव्यक्ति का सबसे महत्वपूर्ण साधन है। यह बालकों में तर्क चिन्तन एवं कल्पना शक्ति का विकास करती है तथा छात्रों को अपने विचारो को व्यवस्थित रूप में प्रदर्शित करने का अवसर देता है।

पाठ्य सहगामी क्रियाओं का महत्व –

प्राथमिक विद्यालय जो कि बालक के शिक्षा के आधार होते है इस समय बालकों के बौद्धिक विकास के साथ–साथ शारीरिक, मानसिक गुणों का भी विकास होता है। विद्यालय में करायी जाने वाली पाठ्य सहगामी क्रियायें बालक के सर्वांगीण विकास का सर्वोत्तम साधन होती है। जिससे बालकों का शारीरिक एवं मानसिक विकास के साथ–साथ बालकों में स्वतंत्र चिन्तन तर्क गुणों का विकास होता है। पाठ्य सहगामी क्रियाओं के महत्व को हम निम्नलिखित बिन्दुओं से समझ सकते हैं–

- पाठ्य सहगामी क्रियाओं में खेल–कूद से बालकों में सहयोग, प्रेम, धैर्य, सहनशीलता एवं नेतृत्व के गुणों का विकास होता है। और वह अपनी रूचि के अनुसार कार्य करता है। बालक में नागरिकता के गुणों का विकास होता है।
- विद्यलाय आयोजित होने वाले पाठ्यसहगामी क्रियाओं से बालकों में स्वार्थ की भावना कम हो जाती है और व समाज में परमार्थ जैसे कार्यों की ओर भी अग्रसर होता है।
- वर्तमान समय में शिक्षा सैद्धान्तिक के साथ–साथ व्यवहारिक रूप में भी प्रचलित है। यह केवल ज्ञान के भण्डार के रूप में नही बल्कि क्रियाओं का योग होता है जो बालक के व्यवहारिक ज्ञान को बढ़ाती है।
- प्रत्येक बालक की रूचि अलग–अलग होती है जैसे खेलकूद, चित्रकारी, नाटक आदि। पाठ्य सहगामी क्रियाओं में उसे अपने रूचि के अनुसार कार्य प्रदर्शन का अवसर प्राप्त होता है। जो आगे उसके मार्ग को प्रसस्त करती है।

- स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मष्तिष्क का वास होता है। पाठ्य सहगामी क्रियाओं से बालक शारीरिक और मानसिक रूप से स्वस्थ होता है।
- पाठ्य सहगामी क्रियाओ में जैसे–वाद–विवाद, कला प्रदर्शन आदि बालक के स्वतंत्र अभिव्यक्ति को बढ़ावा देते हैं जिससे बालक में स्वतंत्र चिन्तन की शक्ति का विकास होता है।
- विद्यालयों में ज्ञान के साथ–साथ मनोरंजन कार्य भी होना चाहिए जो पाठ्य सहगामी क्रियाओं से सम्भव है जिससे बालक शैक्षणिक ज्ञान के साथ–साथ मनोरंजन भी कर सके।
- पाठ्य सहगामी क्रियाओं से बालकों में नैतिकता के गुणों का विकास होता है। सही गलत के निर्णय लेने की शक्ति उत्पन्न होती है। दैनिक दिनचर्या सम्बन्धी कार्यों के बारे में जानकारी प्राप्त होती है।
- पाठ्य सहगामी क्रियाओं में जैसे शैक्षिक भ्रमण से बालक को प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त होता है।
- पाठ्य सहगामी क्रियायें बालक के समय के सदुपयोग का साधन होती हैं।

निष्कर्ष –

प्राथमिक विद्यालयों में जबकि बालक अपने बाल्यावस्था में होता है, उसका शारीरिक और मानसिक विकास दोनों हो रहा होता है। पाठ्य सहगामी क्रियायें बालक के सर्वांगीण विकास में सहायक होती हैं। पाठ्य सहगामी क्रियाओं से बालक की रूचि, गति एवं क्षमता का पता चलता है और बालक को स्वतंत्र रूप से विकास का अवसर प्राप्त होता है। पाठ्य सहगामी क्रियायें बालक के व्यावहारिक ज्ञान का आधार होती हैं। बालक को प्रत्यक्ष ज्ञान एवं अनुभव का अवसर प्राप्त होता है। वर्तमान समय में शिक्षा के मूलभूत लक्ष्य बालक का सर्वांगीण विकास एवं समाज का सभ्य नागरिक बनाने को पाठ्य सहगामी क्रियाओं से प्राप्त किया जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची–

- गुप्ता, एस0पी0 (2006), भारतीय शिक्षा का इतिहास, विकास एवं समस्याएं, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।
- पाठक, पी0डी0 (2008), भारतीय शिक्षा और उसकी समस्याएं, अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा।
- पाठक, पी0डी0 (2013), शिक्षा मनोविज्ञान, अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा।
- सक्सेना, सरोज (2009), विद्यालय प्रशासन एवं स्वास्थ्य शिक्षा, साहित्य प्रकाशन आगरा।
- शर्मा, आर0 ए0 (2007), सामाजिक विज्ञान शिक्षण, आर0 लाल0 बुक डिपो, मेरठ।